उपसंहार

आजादी के बाद साहित्य की तीन प्रतिरोधात्मक धाराएँ बहुत स्पष्ट हो गयीं हैं —पुरुषवादी-सत्ता के ख़िलाफ, जिसका परिणाम आज का स्त्रीवादी साहित्य है ; जातिगत-सत्ता के ख़िलाफ, जिसका परिणाम आज का दलितवादी साहित्य है ; राजनीतिक सत्ता के ख़िलाफ जिसका परिणाम आज का जनवादी साहित्य है। आज का—मतलब आजादी के बाद का। अदम गोंडवी के प्रतिरोध का केंद्रीय स्वर राजनीतिक-सत्ता से संबंधित है, यद्यपि अन्य दोनों सत्ताओं का प्रतिरोध भी इसके आनुषंगिक रूप में उनके यहाँ मौजूद है। राजनीतिक सत्ता का विरोध इसलिए हो रहा है कि इसका चरित्र पूँजवादी और सामंतवादी है, जिसके कारण इसने पूँजीपतियों और सामंतवादियों के संरक्षक के रूप में अपनी पहचान क़ायम की है। इसलिए यह ग़रीबों, दलितों, और स्त्रियों के शोषण का माध्यम या दलाल बनकर आयी है। पूँजीवादियों का चरित्र ही है ग़रीबों का शोषण करना, उनके ख़ून-पसीने की कमाई अपने भोग-विलास में उड़ाना ; उसी तरह सामंतवादियों का चरित्र ही है स्त्रियों को अपने भोग की सामग्री समझना और जातिगत-अहमन्यता के कारण तथाकथित शूद्रों या दलितों को अपमान की दृष्टि से देखना और उन्हें अपना सेवक समझना। आज के तकनीकी युग में दोनों की—सामंतवाद और पूँजीवाद की—एक-दूसरे में घुसपैठ हो चुकी है, अतः आम जनता एक साथ दोहरे शोषण का शिकार हो रही है। आजादी के बाद जब भारत में अपनी राजनीतिक-व्यवस्था लागू हुई तो इससे जनता को बहुत उम्मीदें थीं, पर इसने न सिर्फ़ पूँजीपतियों और सामंतवादियों पर कोई प्रहार नहीं किया बल्कि उनके साथ गठबंधन भी कर लिया, और जनता पर पूँजीवादी और सामंतवादी हथकंडों का इस्तेमाल कर उनके शोषण में हिस्सेदार बन बैठी। यह शोषक भी है और पूँजीवाद और सामंतवाद का दलाल भी। अतः जनता देश की इन शोषक-शक्तियों से बुरी तरह त्रस्त है। अदम गोंडवी ने इस त्रस्त जनता की असली तस्वीर पेश की है। जनता की कुंठा, घुटन, संत्रास, भूख, बीमारी और विकट ग़रीबी के बरअक्स नेताओं, पूंजीपतियों और सामंतवादियों के भोग-विलास की तस्वीर पेश कर प्रजातंत्र को झूठा साबित कर दिया है। और ऐसा करके वे जनता में इन शोषक-शक्तियों के ख़िलाफ क्रांतिकारी चेतना पैदा करना चाहते हैं। वे साहित्य को देश और समाज की अवांछित-स्थिति में परिवर्तन लाने का ज़रिया मानते हैं। अदम पर मार्क्सवाद का प्रभाव पर्याप्त मात्र में है पर उनका साहित्य सिर्फ़ मार्क्सवादी-साहित्य नहीं है, उसका फ़लक बहुत विस्तृत है। देश की आम-जनता का शोषण करने, उसे आपस में लड़ाने, और उसे भुलावे में रखने के जितने भी तरीकों का इस्तेमाल राजनीतिक नेतागण किया करते हैं उन सब पर अदम ने क़रारा प्रहार किया है, वह चाहे भ्रष्टाचार

का मामला हो या मंहगाई का ; सांप्रदायिकता भड़काने का मामला हो या भाषा, जाति के नाम पर लड़ाने का ; टी० वी०, अख़बार आदि में 'सेक्स'का मसाला परोसकर युवा पीढ़ी की सोच को राजनीतिक-दिशा से भटकाने का मामला हो या संसद भवन में नेताओं द्वारा एक दूसरे पर आरोप लगाने की झूठी प्रक्रिया चलाकर जनता की सहानुभूति अर्जित करने का हथकंडा। इन सबके अलावा अदम ने वैश्विक संदर्भ में पनप रहे बाजारवादी सभ्यता के हथकंडों पर भी अपनी लेखनी चलाई है। भूमंडलीकरण, उदारवाद, बाजारवाद, नव-पूँजीवाद, नव-उपनिवेशवाद और नव-साम्राज्यवाद में आपस में शाब्दिक-विभिन्नता चाहे जो मौजूद हो, पर हैं ये एक ही थैली के चट्टे-बट्टे। इन सबने आपस में मिल कर एक बाज़ारू-सभ्यता का विकास करने की प्रक्रिया चलाई है , जिसमें दुनिया की हर एक वस्तु को व्यापारिक-नज़रिये से देखा जाता है, ख़रीद-फ़रोख्त के नज़रिये से देखा जाता है। न सिर्फ़ इनकी सभ्यता ने हर वस्तु पर अपनी बाजारू-नज़र का मूल्य चस्पा किया है बल्कि उन चीजों को नकारने की मुहिम भी चलाई है जिसका कोई 'बाजारू-मूल्य' नहीं होता, जिसे लाख कोशिश करने पर भी बाज़ार में उपलब्ध नहीं कराया जा सकता, जैसे-प्रेम, रिश्ता, संवेदनाएँ, भावनाएँ आदि। इस सभ्यता ने इन अमूर्त चीजों पर सीधे हमला बोला है और इंसान को एक बार फ़िर से जानवरों की श्रेणी में ला पटकने की मुहिम चलाई है। आदमी दिनों-दिन नंगा होता जा रहा है क्योंकि उसके नंगेपन की भी कीमत बाज़ार में बहुत ज़्यादा है। आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता आदि का झूठा हवाला पेश कर जो वस्त्रों से निजातीकरण की प्रक्रिया तथाकथित आधुनिक-स्त्रियों ने चला रखी है, वे भी उसी बाज़ारू-सभ्यता का एक हिस्सा है। टी० वी०, सिनेमा, अख़बार, मैग्जीन, विज्ञापन सभी जगह इनकी अधनंगी तस्वीरें 'मार्केटिंग' में इजाफ़ा करने का ज़रिया बनी हुई हैं। ये वैश्विक पूँजीवादी-राजनीति हथकंडे हैं जिसमें अन्य देशों की तरह भारत की भी पूँजीवादी–राजनीति शामिल है। अदम के काव्य के चिंतन-केंद्र में देश और समाज के लिए घातक ये सभी समस्याएँ भी रही हैं।

अदम के यहाँ वर्ग-गत समस्या भी है और वर्ण-गत भी। भारत एक ऐसा देश है कि यहाँ दोनों समस्याएँ अपनी जड़ जमाए हुए हैं। उन्होंने पूँजीवाद और सामंतवाद दोनों की मार झेल रहे आम-आदमी, दलित-आदमी का चित्रण अपने काव्य के माध्यम से किया है। उनके यहाँ ग़रीबी की मार झेल रही जनता का दुख-दर्द बयान किया गया है जिसके पास, बावजूद कमरतोड़ मेहनत करने के, खाने को खाना नहीं है और पीने को पानी, जिसके पास पहनने को कपड़े नहीं हैं और रहने को घर। ऐसी आम जनता के हिमायती बनकर अदम काव्य-क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, जिनकी मूलभूत आवश्यकताएँ ही पूरी नहीं हो पा

रही हैं अन्य आवश्यकताओं और सुविधाओं को पूरा करने की बात तो दूर की है। समस्याएँ उनके यहाँ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी हैं ; पर मुख्य समस्या भूख की है, ग़रीबी की है। और इन सबका जिम्मेदार इन्होंने वर्तमान राजनीतिक-व्यवस्था को ठहराया है, कि यदि आप इतने दिनों तक मौजूदा व्यवस्था में बने रहने के बाद भी आज तक ग़रीबी और भुखमरी की समस्या से आम-जनता को निजात नहीं दिला पाये, पूँजीपतियों और सामंतवादियों की अथाह संपत्ति की भागीदारी में आम जनता को शामिल नहीं करा पाये, उल्टे खुद पूँजीपतियों और सामंतवादियों की जमात में जाकर शामिल हो गए और आम जनता का शोषण करने लगे; तो ऐसी दशा में आप जैसे व्यवस्थापकों और आपकी इस व्यवस्था का इसी तरह बने रहना किसी कीमत में ठीक नहीं है, इसमें बदलाव होगा और बदलाव जनता खुद करेगी। इसके लिए अदम गोंडवी ने अपनी ग़ज़लों और नज़्मों के माध्यम से आम जनता में नई चेतना भरने की मुहिम चलाई, साहित्यकारों, पत्रकारों व अन्य संचार-माध्यमों को देश और समाज के हित के लिए अपने तुच्छ स्वार्थों के बलिदान करने की ओर प्रेरित करने की कोशिश की। और ऐसे सभी समर्थ तत्वों पर जबरदस्त प्रहार किया जो देश की भूखी और नंगी जनता की समस्याओं से बेखबर होकर अपने ही भोग-विलास में डूबे हुए हैं।